International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 04-01-2026, Accepted: 03-02-2026, Published: 19-02-2026
Volume 8, Issue 1, 2026, Page No. 11-14

भोजपुरी साहित्य में व्यक्त प्रवासन के अभिव्यक्ति

यशवंत कुमार सिंह
शोधार्थी, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार, भारत

सारांश
आज भारत से हर रोज लाखों लोग प्रवास करते हैं। जिसके कई कारण है। जैसेदृआर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक आदि। एक समय ऐसा भी था, जब लोग बेरोजगारी, कम मजदूरी, काम करवाकर मजदूरी नहीं देना, सम्पत्तिहीनता, न्यूनतम भूमि वाले किसान, खेती के लिए पर्याप्त साधन नहीं होना, खेती से खराब आमदनी, सामंती शोषण, जाती उत्पीड़न, तथा उद्योगदृधंधों की कमी इन सारी समस्याओं से परेशान होकर प्रवास के लिए गाँव से शहर की ओर, शहर से महानगर की ओर, फिर देश से विदेश गये। बिहार, उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश जैसे राज्य सबसे अधिक प्रवासी राज्यों में से एक है। प्रवास के लिए विदेश जाने की पीड़ा असहनीय थी। विदेश की धरती पर सर्वप्रथम भारतीय मजदूर 1834 में मॉरीशस गये। मजदूरों को कोलकत्ता से पानी के जहाज द्वारा ले जाया गया। उन्हें भारतीयदृबंधुआदृमजदूरदृप्रवासन–प्रथा तहत अनपढ़ एवं सीधे–साधे मजदूरों को कई तरह के प्रलोभन देकर पांच साल के एग्रीमेंट पर धोखे से ठेपा लगवाकर ले जाया गया। हलाकि मॉरीशस पहुँचते ही उन्हें तमाम कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इसके बाद भारतीय मजदूरों को फ़िजी, सूरीनाम, त्रिनिडाड, सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका, गुयाना, युगांडा, वेस्टइंडिज, नीदरलैंड आदि देशों में गये।

मूल शब्दः प्रवासन, मजदूर, किसान, मॉरीशस, सूरीनाम, फ़िजी, त्रिनिडाड, बिहार

प्रवासन मानव सभ्यता के इतिहास में एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया रही है। जीवन–यापन की आवश्यकताओं, सामाजिक असमानताओं, आर्थिक दबावों और राजनीतिक परिस्थितियों ने मनुष्य को एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर जाने के लिए विवश किया है। भारतीय संदर्भ में प्रवासन की समस्या विशेष रूप से औपनिवेशिक काल में गंभीर रूप से उभरकर सामने आती है। बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश जैसे क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोगों का गाँव से शहर, शहर से महानगर और अंततः देश से विदेश की ओर पलायन हुआ। इस प्रवासन के मूल में बेरोजगारी, गरीबी, कृषि संकट, जातिगत शोषण तथा औद्योगिक अवसरों की कमी जैसे कारण रहे हैं।

भोजपुरी क्षेत्र से हुआ यह प्रवासन केवल भौगोलिक परिवर्तन नहीं था, बल्कि यह गहरे सामाजिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक प्रभावों से जुड़ा हुआ था। प्रवासी मजदूरों ने अपनी पीड़ा, संघर्ष, स्मृतियों और आशाओं को लोकगीतों, नाटकों, उपन्यासों और कविताओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया। 'बिदेसिया' जैसी लोकसंस्कृति और गिरमिटिया मजदूरों के अनुभवों ने भोजपुरी साहित्य को एक विशिष्ट संवेदनशीलता प्रदान की। यह साहित्य न केवल प्रवासन की त्रासदी को उजागर करता है, बल्कि प्रवासी जीवन के संघर्ष, श्रम, अस्मिता और सांस्कृतिक जिजीविषा का भी सशक्त दस्तावेज प्रस्तुत करता है।

प्रवासन मानवजाति के प्रारंभ से ही मानव का महत्वपूर्ण विशेषता रहा है। लगभग दो सौ साल पहले बिहार और उत्तर प्रदेश से प्रवासन व्यापक पैमाना पर शुरू हुआ था। उस समय देश पर अंग्रेजों का शासन था। जमींदारी प्रथा चरम पर था। जमींदारों के बढ़ते लगान से किसान और मजदूर बहुत परेशान थे। खेती के लिए यहाँ पर्याप्त साधन उपलब्ध नहीं थे। कभी बाढ़ आकर फसल को बर्बाद कर देता था तो कभी सूखा हो जाने से फसल खराब हो जाते थे। कभी फसल लगता तो उसे जंगली जानवर आ कर नष्ट कर देते थे। किसान और मजदूरों को अपना परिवार का जीविका चलाना मुश्किल हो गया था। फसल अच्छा नहीं होने के कारण लोग परेशान रहते ही थे, उस समय हैजा–फ्लैग जैसे कई महामारी भी आकर लोगों को और तबाह कर देता था। बिहार और उत्तर प्रदेश के लगभग पूरी आबादी कृषि पर निर्भर थी इसलिए यहाँ के लोगों के जीविका का मुख्य साधन खेती था। रोजी–रोजगार का कोई दूसरा साधन नहीं था। यहाँ उद्योग–धंधा का नितांत कमी था। अंग्रेजी शासन ने इन ईलाका को अनऔद्धयोगिक कर दिया था। उस समय इन इलाकों में कपास के कपड़ा कुटीर उद्योग के रूप में था। अंग्रेजों ने धीरे–धीरे उसे भी बंद करवा दिया। मजबूरन यहाँ के लोग रोजी–रोजगार के लिए शहरों में निकल पड़े। उस वक्त कोलकत्ता देश की राजधानी थी। वहां जुट मील और बंदरगाह होने के कारण उद्योग–धंधा एवं रोजगार का केंद्र था, इसलिए लोग कोलकत्ता के तरफ अपना रुख किये। वहां आसानी से रोजगार मील जाता था। इसके आलावा पंजाब, ढाका, आसाम, रंगून आदि शहरों में प्रवासी मजदूर के रूप में गये।

बिहार के तीन हजार के आबादी वाली जमींदारी में बेहतर श्रमिकों को केवल दो रुपये या तीन रुपये मासिक मजदूरी मिलाती है। खाने को चावल मिलता नहीं और मोटे अनाज पर जिंदगी कटती है।[1]

केदारनाथ पाण्डेय अपने नाटक 'शुरुआत' में लिखते हैं कि– "ग्रामीण व्यवस्था में शोषण से बचने के लिए लोग शहर की ओर जाते। वहाँ वे उद्योग–धंधे या अन्य काम में लगते, पूंजीबाद का शोषण सूक्ष्म और जटिल था जल्दी समझ में नहीं आता। "

प्रवासन का दूसरा कारण उस समय सामाजिक एवं धार्मिक भेद–भाव भी था। जात–पात, उच्च–नीच तथा धर्म–मजहब में लोग बट गए थे। बिहार, उत्तर प्रदेश से लोग बेरोजगारी, कम मजदूरी, काम करवाकर मजदूरी नहीं देना, सम्पत्तिहीनता , न्यूनतम भूमि वाले किसान, खेती के लिए पर्याप्त साधन नहीं होना, खेती से खराब आमदनी, सामंती शोषण, जाती उत्पीड़न, तथा उद्योग–धंधों की कमी इन सारी समस्याओं से परेशान होकर प्रवास के लिए गाँव से शहर की ओर, शहर से महानगर की ओर, फिर देश से विदेश गये।

विदेश की धरती पर सर्वप्रथम मजदूर 1834 में मॉरीशस गये। मजदूरों को कोलकत्ता से पानी के जहाज द्वारा ले जाया गया। उन्हें भारतीय–बंधुआ–मजदूर–प्रवासन–प्रथा तहत अनपढ़ एवं सीधे–साधे मजदूरों को कई तरह के प्रलोभन देकर पांच साल के एग्रीमेंट पर धोखे से ठेपा लगवाकर ले जाया गया। हलाकि मॉरीशस पहुँचते ही उन्हें तमाम कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जितने सपने दिखाकर मजदूरों को लाया गया था सारा

झूठा निकला। तय समय से ज्यादा काम करवाकर कम मजदूरी दी जाती थी। खाने के लिए कम आनाज मिलता था। रहने के लिए पर्याप्त जगह नहीं मिलता और बीमार पड़ने पर मजदूरों का ईलाज तक नहीं होता था। इन सब के बावजूद भारतीय मजदूरों ने पहाड़ी और बंजर जमीन को समतल बनाकर उन्हें उपजाऊ बनाया | जिस पर गन्ना तथा कई तरह के फसल उगाये।

फ़िजी में भारतीय प्रवासी मजदूरों की कहानी सबसे दुःख भरी है। फ़िजी में सर्वप्रथम भारतीय मजदूरों को 1879 में ले जाया गया था। 1832 में गुलामी प्रथा की समाप्ति के बाद बागानों में कार्य करने के लिए मजदूरों की आवश्यकता थी। मजदूरों की इस आवश्यकता को 'इन्डेचार्ड एग्रीमेंट' के तहत लाए जाने वाले मजदूरों से पूरा किया गया। फ़िजी की सरकार ने इसी करारनामे के आधार पर बागानों व सी. एस. आर. कम्पनी के लिए भारत से मजदूरों को आयात करना प्रारम्भ किया।[2]

फ़िजी में लगभग पचास प्रतिशत लोग भारतीय मूल के हैं। वे भारत के भिन्न–भिन्न प्रदेशों से आए थे। उस समय उनकी भाषा भी अलग–अलग थी। मुख्यत: ये लोग पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के क्षेत्रों से शर्तबंध श्रमिकों के रूप में यहाँ लाए गए थे। दक्षिणी भारत के अनेक प्रदेशों से भी लोग यहाँ लाये थे। इसी प्रकार पंजाब और गुजरात से भी यहाँ बड़ी संख्या में लोग लाए गए थे। मॉरीशस से कहीं ज्यादा फिजी में भारतीय मूल के मजदूरों को कई तरह के कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। वहां के भारतीय प्रवासी समुदाय को वहां के मूल निवासियों ने उत्पीड़न कर भगा दिया, पहली बार 1987 और दुसरी बार 1990 में वहां के मूल निवासियों ने लोकतांत्रिक ढंग से चूनी हुई भारतीय मूल के नेतृत्व वाली सरकार को अपदस्थ कर दिया और भारतीय मूल के लोगों को दुसरे दर्जे का नागरिक बना दिया जिसके फलस्वरूप भारतीय मूल के लोगों को फ़िजी छोड़ना पड़ा।

सूरीनाम में भी मॉरीशस, फ़िजी, त्रिनिडाड एवं अन्य देशों के तरह ही भारतीय मजदूरों को शर्तबंद प्रथा के तहत पांच साल के एग्रीमेंट पर डच और ब्रिटिशों ने 19 वीं सदी के मध्य से 20 वीं सदी की शुरुआत में लाया गया था।

सर्वप्रथम 5 जून 1873 को कलकत्ते से लालारुख नामक समुंद्री जहाज द्वारा 410 भारतीय सूरीनाम पहुंचे। और गन्ना और ककाऊ की खेती करने में लग गये। यह भारतीय किसान गन्ने और ककाऊ की उपज बढ़ाने में धीरे–धीरे सफलता प्राप्त करते रहे। 1873 से 1916 तक भारतीय किसान कुल 64 जहाजों द्वारा सूरीनाम भेजे जाते रहे। कुल मिलकर इन किसानों की संख्या 3357 2 तक पहुँच गई थी। पांच वर्ष के अनुबंध के पूरे हो जाने पर 11559 किसान परिवार स्वदेश लौट आए। शेष किसान परिवार सूरीनाम में ही खेतीबाड़ी के काम में लग गए और और वहीं जमीन प्राप्त करके बस गए द्य तब से ये सूरीनाम के नागरिक के रूप में यहाँ स्थायी निवासी हैं।[3]

इस तरह भारतीय मजदूर मॉरीशस, फ़िजी, सूरीनाम, त्रिनिडाड, सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका, गुयाना, युगांडा, वेस्टइंडिज, नीदरलैंड आदि देशों में गये। कुछ मजदुर एग्रीमेंट ख़त्म होने पर वापस अपने मुल्क आ गये और कितने मजदुर वहीं प्रवासी बनकर रह गये। आधुनिक युग में भी देश और विदेश में बहुत तेजी से प्रवास हो रहे है। इसके कई कारण है। जैसे–आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक आदि। आज कई देशों का प्रतिनिधित्व भारतीय मूल के प्रवासी लोग कर रहे हैं। भारत के आर्थिक विकास में प्रवासियों का महत्वपूर्ण योगदान है। जिसे निम्न लेखकों ने अपने महत्वपूर्ण पुस्तकों में अभिव्यक्त किया है।

1. धनंजय सिंह की पुस्तक 'प्रवासी श्रम इतिहास' (2016) में प्रवासन को लेके महत्वपूर्ण अध्ययन किया गया है। मजदूरों के प्रवासन से विभिन्न प्रकार के लोकसंस्कृतियों का जन्म हुआ है जिसमें बनिजिया लोकसंस्कृति, सिपहिया लोकसंस्कृति आ बिदेसिया लोकसंस्कृति का एक लम्बा मौखिक परम्परा है। इसमें प्रवासियों के यात्रा अनुभव बेहद संवेदनशीलता से अभिव्यक्त हुआ है। जिसे इस पुस्तक में धनंजय सिंह द्वारा प्रस्तुत किया गया है।
2. वजेंद्र भगत 'मधुकर' की पुस्तक 'मधुबहार' (1985) प्रकाशित हुआ। मॉरीशस के कवि मधुकर के कविताओं में भारत से गये मजदूरों के मनोदशा का साफ चित्रण हुआ है। भारत से गये मजदूरों की कहानी अत्यंत दुःख भरी है। उन लोगों को अंग्रेज धोखे से अनेक प्रलोभन दे कर मॉरीशस ले गये। वहां जाने के बाद उन्हें बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। वे लोग भारत नहीं आ सके। इन्ही लोगों के बीच से वजेंद्र भगत मधुकर आये थे। मधुकर आपने पूर्वजों की दुःख भरी कहानी अपनी पुस्तक मधुबहार में लिखे हैं।
3. तोतोराम सनाढ्य की पुस्तक 'फिजीद्वीप में मेरे 21 वर्ष' (2009) एक महत्वपूर्ण एतिहासिक कृति है। इस में भोजपुरी समाज के उन मजदूरों का यथास्तिथि पर प्रकाश डाला गया है जो भूख, बेरोजगारी, उत्पीड़न, प्रताड़ना या अन्य पारिवारिक कलह के कारण घर–परिवार छोड़ने वाले स्त्री–पुरुष की मज़बूरी का फायदा उठाकर उन्हें झांसा देकर अज्ञात देश में भेज दिया गया था। सन् 1879 से लेकर सन् 1916 तक 87 जहाज 60,000 स्त्री–पुरुषों को मुख्यतः कलकत्ते और अंशतः मद्रास से फिजी गिरमिटिया मजदूर बनाकर पंहुचा चुके थे। फिजी में मजदूरों की दुःख भरी कहानी असहनीय है। तोताराम अपनी इस पुस्तक में लिखते हैं कि पुरुषों के मुकाबले औरतों की यातना, कई गुणे ज्यादा थी। भारत में छूटे अपने बच्चे, माँ–बाप, भाई–बहन आदि को वे भूल नहीं पा रही थी, अकसर रोती रहतीं। खेत की मेड़ पर बच्चे को लिटा कर खेत में काम करना पड़ता। अनुमानिक रूप से स्त्रियों की संख्या कम होने के चलते उन्हें गोरे ओवरसियरों से लेकर जिस–जित पुरुष के यौन–शोषण का शिकार होना पड़ता था। वे बहुभोग्या, बहुपतित्व का केंद्र थीं। मगर धीरे–धीरे तजुर्बों के ये दिन ख़त्म होते गये। कालान्तर में शिक्षित होकर वे सिफ समाज का अंग ही नहीं बनीं बल्कि उन्होंने शिक्षा और विकास के दुसरे अवसर भी प्राप्त किये। तोतोराम सनाढ्य फिजिद्विप में 21 वर्ष रहे हैं। वे उन परिस्थितियों से भलीभांति अवगत हैं । यह पुस्तक इतिहास के सही जानकारी के लिए महत्वपूर्ण है।
4. वीरेंद्र नारायण यादव द्वारा सम्पादित पुस्तक 'भिखारी ठाकुर रचनावली' (2005) में भिखारी ठाकुर के सभी रचनाएँ संकलित है। इस पुस्तक में भोजपुरी के सभी कठिन शब्दों के अर्थ हिंदी में लिखा गया है। इन रचनाओं में भोजपुरी क्षेत्र के जनताओं की सच्चा दुःख–दर्द व्यक्त हुआ है। भिखारी ठाकुर की रचना गब्बर घिचोर और बिदेसिया में प्रवास के फलस्वरूप होने वाली पारिवारिक विचलन का चित्रण हुआ है। उनका और साहित्य भी प्रवास के समस्याओं का चित्रण किया है।
5. प्रह्लाद रामशरण की पुस्तक 'मॉरीशस का इतिहास' (2004) बहुत रोचक और महत्वपूर्ण है। हिन्द महासागर का यह देश लघु–द्वीप है। मॉरीशस 12 मार्च सन् 1968 में आजाद हुआ और सन् 1991 में यह राष्ट्रकुल के अंतर्गत गणराज्य घोषित हुआ। मॉरीशस के मूल निवासी में फ़्रांसिसी उद्योगपति, अंग्रेज अधिकारी, अफ़्रीकी दास, भारतीय गिरमिटिया मजदूर और चीनी अप्रवासियों की गिनती होती है। मॉरीशस के वर्तमान परिदृश विभिन्न धर्म, संस्कृति, भाषा, वेशभूषा का इन्द्रधनुषी परिदृश्य है। प्रह्लाद रामशरण मॉरीशस के एक गम्भीर लेखक, चिंतक और पत्रकार हैं। इसी कारण से यह पुस्तक प्रमाणिक और महत्वपूर्ण है।

6. उदय नारायण तिवारी द्वारा लिखी 'भोजपुरी भाषा और साहित्य' (1984) पुस्तक भोजपुरी भाषा और साहित्य का दस्तावेज है। इस में भोजपुरी लोकसाहित्य से लेकर पनिष्ठ साहित्य का सम्यक संकलन और विवेचन हुआ है। इस में भोजपुरी भाषा और साहित्य का गम्भीर शोध और अनुसंधान हुआ है। इस में भोजपुरी के भाषिक विशेषताओं को रेखांकित किया गया है। इस पुस्तक में आधुनिक भोजपुरी कवियों और लेखकों के रचनाओं पर प्रकाश डाला गया है।
7. Lock Sohodeb की पुस्तक 'बिहारी बाबू' (2012) है। भारत से मॉरीशस गये भोजपुरी भाषी लोग वहां अपना सत्ता स्थापित कर लिये। शासन सहित जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में वे लोग शीर्ष पर पहुंचे। इन्हीं लोगों के बीच से Lock Sohodeb थे। वे मॉरीशस के बाद इंग्लैण्ड में प्रवास करने लगे। उनका बिहारी बाबू नामक उपन्यास में प्रवास का पीड़ा अभिव्यक्त हुआ है। यह उपन्यास देवनागरी लिपि के साथ–साथ रोमन लिपि में भी प्रकाशित हुआ है।
8. श्रीकांत की यह पुस्तिका 'बिहार: पलायन की पृष्ठभूमि' बिहार के प्रवासन के इतिहास पर केन्द्रित एक आरंभिक नोट है। इस पुस्तक में बिहार के विभिन्न जिलों से हुये प्रवासन पर शोधपूरक चर्चा किया गया है। इस पतली सी पुस्तक में बिहार से पलायन का कारण डाटा के साथ अंकित है। बिहार से मजदूरों का कब, क्यों, कैसे, कहाँ, और कितना पलायन हुआ इस पुस्तक में प्रमाणिक रूप से लिखा गया है। कुल मिलकर यह पुस्तक पलायन पर सांगोपांग है।
9. अभिमन्यु अनत की 'लाल पसीना' यह इतिहासिक उपन्यास है द्य अभिमन्यु अनत मॉरीशस के प्रसिद्ध लेखकों में से एक है द्य उनकी यह उपन्यास बहुत प्रसिद्ध हुआ | मॉरीशस गये भारतीय प्रवासी मजदूरों के जीवन–संघर्षों पर आधारित यह उपन्यास अभिमन्यु अनत की महत्वपूर्ण कृति है। भारत के सीधे–साधे अनपढ़ मजदूरों को फ़्रांसिसी और ब्रिटिश उपनिवेशों द्वारा लोभ–लालच देकर एग्रीमेंट पर मॉरीशस ले जाया गया था। वहां जाने के बाद मजदूरों को कई तरह के यातनाओं को सहना पड़ा। इसके बावजूद भी भारतीय मजदूरों ने वहां चट्टानों को तोड़कर समतल बनाकर उसमें गन्ने की खेती शुरू की। इस उपन्यास में भारतीय मूल के प्रवासी मजदूरों के प्रतारणाओं को उल्लेखित किया गया है।
10. ब्रिज. वि. लाल की पुस्तक 'फिजी यात्रा आधी रात से आगे' एक निबंध संग्रह है। इस पुस्तक में भिन्न प्रवासी संप्रदाय, फिजी–भारतीय जो, उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दीयों में, शर्तबंद मजदूरी के परिणामस्वरूप उभर कर सामने आए, के अनुभवों का संकलन है। इस में विभिन्न राष्ट्रों की सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों का विश्लेषणात्मक उल्लेख भी है। लाल ब्रिज. वी. का जन्म फिजी में हुआ था। उनके पूर्वज गिरमिटिया के रूप में भारत से फिजी गये थे।
11. अरविन्द मोहन द्वारा लिखा "बिहारी मजदूरों की पीड़ा" पुस्तक बिहार से प्रवास के लिए पंजाब गए मजदूरों से जुड़ा एक महत्वपूर्ण अध्ययन है। इस में पंजाब में बिहारी मजदूरों की पीड़ा को दिखाया गया है।
12. डॉ. शालिनी की पुस्तक फ़िज़ी 'आप्रवासी भारतीयों का नस्लीय रूपांतरण' एक शोधग्रन्थ है। फ़िजी में गये भारतीय मजदूरों की गाथा सबसे दुःख भरी है। इस में प्रशांत महासागर में स्थित फ़िजी द्वीप समूह में स्वतंत्र भारतीयों के जीवन का सन् 1920 से 19 48 तक के कालखंड का अध्ययन किया गया है। यह कालखंड स्वतंत्र भारतीय गिरमिटिया मजदूरों का फ़िजियाई भारतीय के रूप में नस्लीय रूपांतरण की प्रक्रिया को दर्शाता है।
13. डॉ. राजेश कुमार 'मांझी' द्वारा लिखा गिरमिटिया भारतवंशी एक महत्वपूर्ण नाटक है। यह गिरमिटिया मजदूरों के जीवन के यर्थाथ चित्रण है। इस नाटक में डॉ. राजेश कुमार उस समय को बहुत बारीकी से दिखाए है, जब भारत से 1834 से 1920 तक अलग–अलग देशों में भारतीय मजदूरों को गिरमिटिया मजदूर बनाकर ले जाया जाता था।
14. "जहाजी भाई" उपन्यास के लेखक रास बिहारी पाण्डेय है। यह उपन्यास भोजपुरी भाषा में लिखी गई है। इस उपन्यास में भोजपुरी क्षेत्र के उन लोगों की कहानी है, जो परिस्थितिवश अंग्रेजों के झांसे में आकर गिरमिटिया मजदूर बन के मॉरीशस गये। इस उपन्यास का व्यथा–कथा भोजपुरी क्षेत्र के लोगों के प्रवासिता, कर्मठता, धैर्य और साहस के गुण को उजागर करता है जो भोजपुरिया लोगों का संस्कार है।
15. डॉ. नर्मदेश्वर चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित पुस्तक प्रवासी भोजपुरी में विभिन्न लेखकों के प्रवासन पर लिखित आलेखों का संग्रह है। इस पुस्तक में मॉरीशस, ट्रिनीडाड, सुरिनाम, फ़िजी, युगांडा, जमाइका, गुयाना, केनिया, मालद्विप आदि देशों में गये प्रवासी मजदूरों की स्थिति–परस्थिति को विभिन्न आलेखों में उल्लेखित किया गया है। इस पुस्तक में इन सारे देशों के रचनाकारों के प्रकाशित रचनाओं को संग्रहित कर प्रकाशित किया गया है।

निष्कर्ष

पूर्वांचल ख़ास कर के भोजपुरी भाषी क्षेत्रों से विश्व के कई देशों में लाखों की संख्या में लोगों ने पलायन किया. रोजी–रोटी की तलाश उन्हें अपनी माटी से दूर ले गई. उनमें से कुछ वापस वतन लौटें जरुर पर बहुतों ने फिर अपनी माटी, अपने परिवारजनों का मुँह तक ना देखा. बहुत थोड़े से कपड़ों और नाममात्र की सामग्री साथ लेकर गये प्रवासियों ने विदेशी धरा पर ही एक नया संसार बसा लिया जिसमें भारत की मिट्टी की सुगंध समाई हुई थी. इन प्रवासियों के दिलो–दिमाग से मातृभूमि की याद, भारतीय सभ्यता–संस्कृति और भारतीय परम्परा की छाप कभी मिट नहीं आई. कालांतर में उनके आगे की पीढ़ी के सदस्य भारत आते रहे हैं. अपनी माटी से जुड़ाव, कभी वतन ना लौट पाने की कसक, परिवार और गाँव–घर की यादों को कई साहित्यकारों ने अपने कलम से उकेरा है. इनमें से कुछ लेखक प्रवासी भारतीय हैं वहीँ कुछ मूल भारतीय लेखक भी हैं. इनके द्वारा रचित साहित्य से प्रवासन के कारण, प्रवासन की प्रक्रिया के दौरान हुए संघर्षों, विदेश में जी तोड़ मेहनत करके अपने अस्तित्व को बचाए रखने का संघर्ष और भारत की मिट्टी पर फिर कदम ना रख पाने का मलाल सब कुछ दृष्टिगोचर होता है।

सन्दर्भ

1. श्रीकांत. बिहार रू पलायन की पृष्ठभूमि. जेवियर इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल रिसर्च , पटना, पृष्ठ –12, 2021.
2. डॉ. शालिनी. फ़िज़ी 'आप्रवासी भारतीयों का नस्लीय रूपांतरण'. प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली पृष्ठ– 25, 2014.
3. चतुर्वेदी, डॉ. नर्मदेश्वर. प्रवासी भोजपुरी. लोक साहित्य संगम, राम सूरत भवन, बिहिया, भोजपुर (बिहार) पृष्ठ– 16.
4. सिंह, धनंजय. प्रवासी श्रम इतिहास. भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, राष्ट्रपति निवास, शिमला, 2016.
5. भगत, वजेंद्र 'मधुकर'. मधुबहार, भोजपुरी अकादमी, पटना, 1985.
6. सनाढ्य, तोताराम. फ़िजी द्वीप में मेरे 21 वर्ष. रेमाधव पब्लिकेशन प्रा. लि. राजनगर, गाजियाबाद (उ. प्र.), 2009.
7. यादव, वीरेंद्र नारायण. भिखारी ठाकुर रचनावली. बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 2005.

8. रामशरण, प्रह्लाद. मॉरीशस का इतिहास. वाणी प्रकाशन 21 – ए, दरियागंज, नई दिल्ली, 2004.
9. तिवारी, उदय नारायण. भोजपुरी भाषा और साहित्य. बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 1984.
10. Sohodeb, Lock- बिहारी बाबू. Masters Continuous Stationery Ltd. St. Vincent de Paul Ave. pai. lles, Republic of Mauritius, 2012
11. अनत, अभिमन्यु. लाल पसीना. राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली, 1977.
12. लाल, ब्रिज. वि. फ़िजी यात्रा आधी रात से आगे, राष्ट्रिय पुस्तक न्यास, भारत, नेह: भवन, वसंत कुंज, नई दिल्ली, 2005.
13. मोहन, अरविन्द. बिहारी मजदूरों की पीड़ा, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. 7/31 अंसारी मार्ग दरियागंज, नई दिल्ली, 2017.
14. कुमार, डॉ. राजेश 'मांझी'. गिरमिटिया भारतवंशी, सर्वभाषा प्रकाशन, उत्तम नगर, नई दिल्ली, 2022.
15. पाण्डेय, डॉ. राशबिहारी. जहाजी भाई. लोक साहित्य संगम, रामसुरत भवन, बिहिया भोजपुर, बिहार, 1991.